हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

द्वारा

भारतीय शिक्षण मण्डल

एवं

महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी समाजकार्य अध्ययन केंद्र

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

दिनांक : 12-14 मार्च. 2016

प्रतिवेदन/रिर्पोट

कार्यशाला

कार्यक्रम विवरण	कार्यक्रम का स्वरूप	कार्यक्रम स्थल	अवधि	आयोजक
समाजकार्य शिक्षा के भारतीयकरण हेतु पाठ्यचर्या विकास	राष्ट्रीय कार्यशाला	वर्धा, महाराष्ट्र	29-30 जून, 2018	महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी समाजकार्य अध्ययन केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

'समाजकार्य शिक्षा के भारतीयकरण हेतु पाठ्यचर्या विकास' पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला (दिनांक 29-30 जून, 2018)

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा भारतीय शिक्षण मण्डल एवं महात्मा गांधी फ्यूजी गुरूजी समाजकार्य अध्ययन केंद्र के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29-30 जून, 2018 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में समाजकार्य पाठ्यक्रम कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए देश के विभिन्न समाजकार्य विशेषज्ञों और विद्वानों ने कार्यक्रम में सहभागिता की।

राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन सत्र महत्वपूर्ण विद्वानों और सहभागियों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम सत्र का उद्घाटन वक्तव्य श्री मुकुल कानिटकर ने दिया। उन्होंने कार्यशाला में अपने विचार रखते हुए कहा कि कार्यशाला में हमको एक बेहतर पाठ्यक्रम तैयार करना होगा, जो किसी भी विश्वविद्यालय के लिए प्रमाणिक और मानक स्तर का हो। इसके लिए हमें सबसे पहले जरूरी पाठ्य-पुस्तकें सजगता से तैयार करनी होंगी जो विद्यार्थियों के लिए उपयोगी और सहज ज्ञान से मार्मिकता की ओर ले जाने वाली रुचिकर सामग्री से प्रतिबद्ध हों। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय इतिहास में हम समान्यतः परम्पराओं और संस्कृति के स्वरूप को सहज ही देख सकते हैं जिनसे व्यवस्था का निर्माण होता है। उदाहरण के तौर पर 'अतिथि देवो भवः' को देखा जा सकता है। भारतीय समाज में समाजकार्य व्यवसाय की एक नई पहल आवश्यक है। एक ओर मनोविज्ञान को भारतीय समाज में स्वीकार किया गया क्योंकि इसका इतिहास भारत में पहले से रहा है लेकिन समाजकार्य के लिए यह चुनौती बनी हुई है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि इसका कोई इतिहास भारत में नहीं मिलता। समाजकार्य विषय की इस संदर्भ में पड़ताल आज आवश्यक है। समाजकार्य की विषयवस्तु में समाज की अवधारणा और सामाजिक कार्यों की रूपरेखा को ठीक से

जान कर हम भारतीय परिप्रेक्ष्य में इसकी जड़ें देख सकते हैं। भारतीय संदर्भ में हम देखे तो परिवार भारतीय समाज का आज भी केंद्र-बिन्दु बना हुआ है।

कार्यशाला का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन के साथ करते हुए मा. कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, प्रतिकुलपति प्रख्यात समाज सेवी डॉ. मुकुल कानितकर तथा प्रो. मनोज कुमार।

कानिटकर ने भारतीय समाज में समाजकार्य की भूमिका को तैयार करने की बात करते हुए कहा कि भारत को किसी राज्य या सरकार की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए, ऐसे आत्मनिर्भर व स्वशासित समाज की निर्मिति के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं में जो कौशल और ज्ञान होना चाहिए वह इस पाठ्यक्रम में शामिल हो। समाज अपने आप ही स्वयं को शासित करेगा। समाजकार्य को केवल प्रोफेशन तक सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि उसका भारतीयकरण होना चाहिए। भारतीयकरण की बात करते हुए हमें वैश्वीकरण तथा सरकार विहीन समाज की निर्मिति के लिए आवश्यक कारकों को इस समाजकार्य के पाठ्यक्रम में शामिल कर देना चाहिए। भारत कभी भी उपनिवेश नहीं रहा बल्कि यहाँ की व्यवस्था का उपनिवेशीकरण जरूर हुआ है। इसलिए हमारा समाज आज भी आत्मनिर्भर ही है। इस संदर्भ में भारत का मतलब ही शास्त्रीय, सार्वजनिक तथा सनातन होना है।

उद्घाटन सत्र के **अध्यक्ष, कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र** ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि आज हमें अपनी सामाजिक व्यवस्था को फिर से सोचने-समझने की आवश्यकता है। आज बाजार के दबाव में सेवा प्राप्तकर्ता 'Client' में बदल गए हैं। उन्होंने इस विषय पर अपना गंभीर चिंतन प्रस्तुत करते हुए कहा कि अमेरिकन समाज को देखें तो बहुत बड़ी समस्या दिखाई देती है। सबसे ज्यादा वहाँ मानसिक रोगी पाए जाते हैं। वहाँ वैयक्तिकता का चरम देखा जा सकता है। वहाँ 'Individual as a Unit' इसी विचार के आधार पर समाजकार्य, मनोविज्ञान और सामाजिक विज्ञान के सिद्धांत बने हैं। ऐसे में हमें इस व्यक्तिवादिता को विकेंद्रित करना होगा। उन्होंने आगे कहा कि समाजकार्य में इस तरह का प्रशिक्षण देना चाहिए, जिसमें समाज में व्यक्त समस्याओं को भारतीय दृष्टिकोण से समाधान किया जा सके। समाज के आदर्शों का निर्माण अनुभववादी बुनियाद पर करना खतरनाक होगा और पश्चिमी विज्ञान में यही सब भारी पड़ा है। इससे बचने के लिए हमें भारतीय साहित्य की ओर रुख करना पड़ेगा। समाजकार्य का ऐसा पाठ्यक्रम होना चाहिए जिसमें भारतीय सामाजिक जीवन के बुनियादी सिद्धांत भी शामिल हों। इस तरह प्रो. मिश्र ने समाजकार्य के पाठ्यक्रम और उसमें भारतीयता के सैद्धांतिक सूत्रों की ओर घूम कर सजग दृष्टि से देखने की

जरूरत पर बल दिया। उन्होंने भारतीय समाज को उसके सांस्कृतिक और पारंपरिक घटकों की ओर दृष्टि से पुनर्मूल्यांकन को उपयोगी बताया तथा भारतीय शिक्षण विधि और शिक्षा पद्धति पर पुनर्विचार की आवश्यकता की ओर इशारा किया। उन्होंने स्त्री

समाज सेवी डॉ. मुकल कानितकर जी को विश्वविद्यालय का प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित करते हुए मा. कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र साथ में प्रतिकुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा तथा प्रो. मनोज कुमार

के मुद्दों को भी समाजकार्य के पाठ्यक्रम के लिए अतिआवश्यक बताते हुए शामिल करने की बात की तथा साथ ही पर्यावरण के जरूरी विमर्श को समाजकार्य के लिए उचित बताया। प्रो. मिश्र ने प्रतिभागियों से कहा कि आप पाठ्यक्रम बनाते हुए अपनी संवेदनाओं को व्यापक बनाते हुए सोचें क्योंकि हम अपने आप को खोते जा रहे हैं।

कार्यशाला में अध्यक्षीय उद्बोधन देते मा. कुलपति महोदय।

इस कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य देते हुए प्रो. मनोज कुमार ने कार्यशाला के बारे में अपनी बात रखते हुए कहा कि हमने भारतीयकरण की इस प्रक्रिया की शुरुआत दिल्ली से की थी जिसका यह दूसरा पड़ाव है। उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसलिए इस प्रक्रिया को पूरी सजगता से हमें करना होगा। उन्होंने पाठ्यक्रम निर्माण की रूपरेखा और आज के सवालों को उसमें शामिल कर तरजीह देने की बात कही।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. सिद्धे गौड़ा जी ने की। जिसका मुख्य विषय 'समाजकार्य के भारतीयकरण का पाठ्यक्रम : दार्शनिक और व्यवहारिक मुद्दे' था। प्रो. डी.पी. सिंह ने 'भारत में समाजकार्य का वर्तमान पाठ्यक्रम : विविध मुद्दे' विषय पर अपने व्याख्यान में समाजकार्य के विविध पहलुओं पर गंभीरता से बात करते हुए, पाठ्यक्रम निर्धारण की समस्याओं पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने बीस वर्ष के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि आज का पाठ्यक्रम मानवतावाद और मार्मिकता के दो तत्वों पर खड़ा है किन्तु इसे भारतीयकरण के लिए वैश्वीकरण पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। इसके लिए हमें पारिवारिक सौहार्द स्थापित करने पर बल देना चाहिए। व्यक्ति और समाज के बीच सौहार्द किस तरह स्थापित हो, हमें इसके लिए सजग रहने की जरूरत है। मनुष्य के वैश्वीकरण की जिस सामाजिक संरचना का आज विकास हुआ है, उसके विविध पहलुओं पर हमें विचार करना होगा। आज हमें आध्यात्मिक आयामों पर बल देने की आवश्यकता है जिसमें सहज और सुगम आलोचना की बड़ी भूमिका होती है। हमें शास्त्रीय या सूत्रवत अध्ययन पर आधारित ज्ञान और व्यावहारिक ज्ञान दोनों की भूमिकाओं को समझना होगा। इसके लिए कार्यकर्ताओं की भूमिका को ठीक से समझना होगा। इन विविध पहलुओं को ध्यान में रखते हुए आज समाजकार्य के पाठ्यक्रम का निर्धारण करना चाहिए। इसी क्रम में प्रो. कांगराज ने 'समाजकार्य का भारतीयकरण : अर्थोपाय' विषय पर गहन समीक्षात्मक वक्तव्य दिया, जिसमें समाजकार्य के भारतीयकरण का क्या मूल्य और मतलब होगा, इस पर विचार विमर्श प्रस्तुत किया। डॉ. विष्णु मोहन दास ने 'समाजकार्य के भारतीयकरण के पाठ्यक्रम हेतु प्रस्तावित उद्देश्य और अभिकल्पना' जैसे अति आवश्यक विषय पर व्यवस्थित व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा प्रतिभागियों से विभिन्न सवालों पर विचार-विमर्श किया। टी. करुणाकरन ने अपने विचार रखते हुए कहा कि समाजकार्य में शिक्षा का यह उद्देश्य होना चाहिए कि वह सामाजिक सिद्धि तैयार करें। उन्होंने गांधीयन समाजकार्य पर अपनी बात रखी। जिसमें उन्होंने अपने गांधीग्राम के पाठ्यक्रम पर विस्तार से बात रखी। इस सत्र में प्रतिभागिता कर रहे तमाम शोध अध्येताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इनमें प्रथम

कार्यशाला सत्र में उद्बोधन देते मा. प्रतिकुलपति महोदय अध्यक्षता करते हुए मा. कुलपति महोदय तथा अन्य अतिथिगण एवं देश के विभिन्न प्रांतों से पधारे प्राध्यापक तथा प्रतिभागीगण।

प्रतिभागी के रूप में भूनेश्वरी जी ने 'भारतीय समाजकार्य' विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि भारत में समाज सेवा एक दिशा में लाने की आवश्यकता है। सोसल पॉलिसी में चाणक्य, डॉ. भीमराव आंबेडकर, महात्मा गांधी को शामिल किया जाना चाहिए। भारतीय समाजकार्य का इतिहास मौर्य काल, अशोक से लेकर महात्मा गांधी तक दिखाई देता है। हमें वहाँ तक पहुँचना होगा। मनोविज्ञान या व्यवहार में हमें सिग्मंड फ्रायड के पश्चिमी अवधारणा के आगे बढ़ना होगा। इस सत्र का संचालन श्री अमित जी ने किया।

द्वितीय सत्र का शीर्षक था- 'भारतीय समाजकार्य का पाठ्यचर्या: मूल प्रक्षेत्र'। इस सत्र की **अध्यक्षता प्रो. उसवीर कौर पोपली** ने किया और इसके उपाध्यक्ष के रूप में प्रो. पामेंला सिंगला मौजूद थे। इस सत्र में डॉ अर्चना कौशिक ने समाज कल्याण प्रशासन पर अपना वक्तव्य दिया। प्रो. लावणी और प्रो. सिंगला ने क्षेत्र-व्यवहार पर अपने उद्बोधन से प्रतिभागियों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न की और फिर आधे घण्टे की अंतरदृष्टिपूर्ण बातचीत हुई।

तीसरे सत्र का शीर्षक 'भारतीय समाजकार्य का पाठ्यचर्या : समाज विज्ञान प्रक्षेत्र' था। इसके अध्यक्ष प्रो. जॉन मेंनाचारी थे और उपाध्यक्षता प्रो. कंगराज ने की। डॉ. विष्णु मोहन दास ने 'समाजकार्य का मनोविज्ञान' पर अपना वक्तव्य दिया। प्रो. आर. आर. पाटिल ने 'भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था पर अपना वक्तव्य दिया। सत्र के अध्यक्ष प्रो. जॉन मेंनाचारी और उपाध्यक्ष प्रो. कंगराज ने 'गुणात्मक शोध' विषय पर वक्तव्य दिया।

पहले दिन का **चौथा सत्र** भी भारतीय समाजकार्य के पाठ्यचर्या और उसके मूल प्रक्षेत्र पर ही केन्द्रित रहा। इसकी अध्यक्षता प्रो. सी. पी. सिंह ने की और उपाध्यक्ष प्रो. सेतु रामलिंगम थे। इस सत्र में प्रो. रंजन सहगल ने सामाजिक नीति, योजना और विधायन विषय पर अपना वक्तव्य दिया। प्रो. आर. आर. पाटिल ने सामाजिक विकास विषय पर बोला। प्रो. कंगराज ने एकीकृत समाजकार्य पर अपना व्याख्यान दिया। कार्यशाला के दूसरे दिन का मूल विषय था- 'समाजकार्य की पाठ्यचर्या का भारतीयकरण: दार्शनिक और व्यवहारिक मुद्दे'। इसके पहले सत्र की अध्यक्षता प्रो. शंकर दास ने की। इसके उपाध्यक्ष प्रो. आर. आर. पाटिल थे। प्रो. यू. के. पोपली ने 'परिवार और बाल कल्याण' तथा 'स्त्री और विकास' विषय पर अंतर्दृष्टिपूर्ण वक्तव्य दिया। प्रो. सी. पी. सिंह ने 'परिवार के साथ समाजकार्य' विषय पर बोला। डॉ. अर्चना कौशिक ने वृद्धों के साथ समाजकार्य विषय पर अपनी बात रखी। प्रो. आर. आर. पाटिल का विषय था- युवाओं के साथ समाजकार्य।

दूसरे दिन के दूसरे सत्र का विषय था- सामुदायिक विकास। इस सत्र के अध्यक्ष प्रो. सेतु रामालिंगम थे। प्रो. आर. आर. पाटिल ने 'सामुदायिक विकास : सिद्धांत और व्यवहार' विषय पर बोला। डॉ. ए. के. मोहन ने ग्रामीण विकास पर और नगरीय विकास पर प्रो. सेतु रामालिंगम ने वक्तव्य दिया। प्रो. कंगराज ने आदिवासी विकास पर अपना विचार साझा किया।

दूसरे दिन के तीसरे सत्र का विषय 'स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य' था। इसकी अध्यक्षता शाहीन सुल्ताना ने किया। प्रो. यू. के. पोपली ने स्वास्थ्य समाजकार्य विषय पर बोला। प्रो. शंकर दास ने सामुदायिक स्वास्थ्य पर बोला। सत्र-अध्यक्ष शाहीन सुल्ताना ने मनोवैज्ञानिक समाजकार्य विषय पर अपने विचारों को साझा किया।

अंतिम सत्र का विषय था- श्रमिक कल्याण और मानव संसाधन विकास। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. सिड्डे गौड़ा ने किया। प्रो. सिड्डे गौड़ा का वक्तव्य बहुत प्रभावी था। उनका विषय था- श्रमिक कल्याण। प्रशांत घोष ने भी श्रम विधायन पर बोला। कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व विषय पर प्रो. डी. पी. सिंह ने वक्तव्य दिया। प्रो. परमार ने औद्योगिक समाज शास्त्र और मनोविज्ञान विषय पर व्याख्यान दिया। प्रो. गंगाभूषण ने 'मानव संसाधन-प्रबंधन' विषय पर अपना वक्तव्य दिया। प्रो. दीपक ने आपदा प्रबंधन पर बोला। प्रो. पामेंला सिंगला ने लिंग और विकास विषय पर वक्तव्य दिया।

समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में मुकुल कानितकर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. आनंद वर्धन शर्मा उपस्थित थे। प्रो. मनोज कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन हुआ।